



NEERAJ®

M.S.O.E.-3
धर्म का समाजशास्त्र
(Sociology of Religion)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.
& Various Central, State & Other Open Universities

By: Hemant Kumar



NEERAJ
PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

धर्म का समाजशास्त्र (Sociology of Religion)

Question Paper—June-2024 (Solved)	1-3
Question Paper—December-2023 (Solved)	1-4
Question Paper—June-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1
Question Paper—December, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-2

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

परिभाषाएं तथा उपागम (Definitions and Approaches)

1. धर्म : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य (Religion: Sociological Perspective)	1
2. मानवशास्त्रीय उपागम (Anthropological Approach)	6
3. ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक उपागम (Historical and Comparative Approach)	12
4. धर्म : मनोवैज्ञानिक उपागम (Religion: Psychological Approach)	17

शास्त्रीय सिद्धांत (Classical Theories)

5. मार्क्सवादी सिद्धांत (Marxist Theory)	21
6. दुर्खीम एवं प्रकार्यवाद (Durkheim and Methodology)	26
7. वेबर एवं प्रातीतिक अर्थ का प्रश्न (Weber and Issue of Conceptual Meaning)	32

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
-------	----------------------------	------

धर्म के नृजातीय-लेखन का अध्ययन (Ethnographic Studies of Religion)

8.	एम.एन. श्रीनिवास : दी कुर्ग (M.N. Shrinivas: The Kurg)	37
9.	इवांस प्रिचार्ड : दी नुऐर (Evans Prechard: The Nueir)	41
10.	टी.एन. मदन : संन्यासहीनता (T.N. Madan: Lack of Renunciation)	49
11.	सुधीर कक्कड़ : शामन, रहस्यमय तथा चिकित्सक	55
	(Sudhir Kakkar: Shamans, Mystics and Doctor)	

समकालिक सिद्धांत (Contemporary Theories)

12.	पीटर बर्जर : धर्म का घटनाशास्त्र (Peter Berger: Phenomenology of Religion)	61
13.	क्लिफोर्ड गीर्टज : सांस्कृतिक विश्लेषण (Clifford Geertz: Cultural Analysis)	67
14.	लेवि स्ट्रॉस का टोटमवाद (Levi-Strauss': Totemism)	72

धार्मिक बहुलवाद (Religious Pluralism)

15.	सिक्ख धर्म (Sikhism)	76
16.	बौद्ध और जैन धर्म (Jainism and Buddhism)	82
17.	ईसाई धर्म (Christianity)	92
18.	इस्लाम धर्म (Islam)	98
19.	हिन्दू धर्म (Hinduism)	103

धार्मिक और सामाजिक परिवर्तन (Religious and Social Change)

20.	पंथनिरपेक्षवाद और पंथनिरपेक्षीकरण (Secularism and Secularization)	109
21.	साम्प्रदायिकता तथा मौलिकतावाद (Communalism and Fundamentalism)	116

धार्मिक पुनर्जागरण : नए आंदोलन और संप्रदाय
(Religious Revivalism: New Movements and Cults)

22. धर्म परिवर्तन (धर्मान्तरण) (Religious Conversion)	123
23. अनुभवातीत चिंतन (टी.एम.) (Transcendental Meditation)	130
24. हरे कृष्ण आंदोलन (Hare Krishna Movement)	136
25. राधास्वामी सत्संग (Radhaswami Satsang)	144
26. शिर्डी के साई बाबा (Sai Baba of Shirdi)	150



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

धर्म का समाजशास्त्र
(Sociology of Religion)

M.S.O.E.-3

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर अवश्य दीजिए।

भाग - I

प्रश्न 1. प्रोटेस्टैण्ट नैतिक तथा पूँजीवाद के उदय के बीच संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-34, 'सरल प्रोटेस्टैण्टवाद तथा पूँजीवाद'

प्रश्न 2. धर्म के अध्ययन में फ्राइड के उपागम की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-17, 'फ्रायड का पुनर्निर्माण', पृष्ठ-20, प्रश्न 2, पृष्ठ-17, 'फ्रायड का अनुयायी : थियोडोर रीक', पृष्ठ-19, संस्कृति तथा आत्म'

प्रश्न 3. 'गैर-त्याग' क्या है? मांगलिकता तथा शुद्धता के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-49, 'गृहस्थ जीवन तथा वैराग्य', पृष्ठ-50, संस्कारों का जीवन-चक्र', 'शुभ तथा पवित्रता की अवधारणा'

प्रश्न 4. मैक्लोडगंज के लामा की रहस्यमय परंपराओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-57, 'मैक्लॉडगंज के लामा'

इसे भी देखें-ऐतिहासिक रूप से इस शब्द का उपयोग सम्मानित आध्यात्मिक गुरुओं या मठों के प्रमुखों के लिए किया जाता था। आज इस उपाधि का उपयोग एक भिक्षु, नन या सामान्य व्यक्ति (विशेष रूप से निंगमा, काग्यू और शाक्य विद्यालयों में) उन्नत तांत्रिक अभ्यासियों को दी जाने वाली एक सम्मानजनक उपाधि के रूप में किया जा सकता है, जो आध्यात्मिक उपलब्धि के स्तर और पढ़ाने के अधिकार को निर्दिष्ट करता है या इसका हिस्सा हो सकता है। दलाई लामा या पंचेन लामा जैसी उपाधि पुनर्जन्म लामाओं (टुल्कस) की वंशावली पर लागू होती है। संभवतः तिब्बती बौद्ध धर्म को समझने का प्रयास करने वाले शुरुआती पश्चिमी विद्वानों की गलतफहमी के कारण, लामा शब्द

को ऐतिहासिक रूप से सामान्य रूप से तिब्बती भिक्षुओं के लिए गलती से लागू किया गया है। इसी प्रकार, प्रारंभिक पश्चिमी विद्वानों और यात्रियों द्वारा तिब्बती बौद्ध धर्म को 'लामावाद' के रूप में संदर्भित किया गया था, जो शायद यह नहीं समझते थे कि वे जो देख रहे थे वह बौद्ध धर्म का एक रूप था। वे तिब्बती बौद्ध धर्म और बॉन के बीच अंतर से भी अनभिज्ञ रहे होंगे। लामावाद शब्द को अब कुछ लोग अपमानजनक मानते हैं।

मैक्लोडगंज गंज का नाम भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर डोनाल्ड फ्रेल मैक्लोडगंज के नाम पर रखा गया था। प्रत्यय गंज एक सामान्य फारसी शब्द है जिसका प्रयोग 'पड़ोस' के लिए किया जाता है। इस क्षेत्र का उल्लेख ऋग्वेद और महाभारत जैसे प्राचीन हिंदू ग्रंथों में मिलता है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में पाणिनि द्वारा और सातवीं शताब्दी ईस्वी में राजा हर्षवर्द्धन के शासनकाल के दौरान चीनी यात्री ह्यून त्सांग द्वारा इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है। धर्मशाला क्षेत्र (और आसपास के क्षेत्र) के मूल निवासी गद्दी हैं, जो मुख्य रूप से एक हिंदू समूह हैं जो परंपरागत रूप से खानाबदोश या अर्ध-खानाबदोश ट्रांसह्यूमन जीवन शैली जीते थे।

यह क्षेत्र 1009 में महमूद गजनवी और 1360 में फिरोज शाह तुगलक के हमलों के अधीन था। 1566 में, अकबर ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और इसे मुगल शासन के अधीन कर दिया। जैसे ही मुगल शासन विघटित हुआ, सिख सरदार जय सिंह ने इस क्षेत्र को अपने नियंत्रण में ले लिया और इसे 1785 में कटोच वंश के वैध राजपूत राजकुमार संसार चंद को दे दिया। गोरखाओं ने 1809 में रणजीत सिंह से पराजित होने से पहले 1806 में आक्रमण किया और इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। 1810 में चंद और सिंह के बीच हुई ज्वालामुखी संधि के तहत कटोच वंश को जागीरदार का दर्जा दिया गया। चंद की मृत्यु के बाद, रणजीत सिंह ने इस क्षेत्र को सिख साम्राज्य में मिला लिया।

हालांकि मैक्लोडगंज की विशिष्टता इसकी तिब्बती संस्कृति और शांति चाहने वालों को आध्यात्मिक सांत्वना प्रदान करने की क्षमता में निहित है। यह शहर परम पावन दलाई लामा का घर है, और इसमें सुंदर मंदिर, स्तूप और स्थान हैं, जो न केवल देखने में आकर्षक हैं, बल्कि मन को शांति भी प्रदान करते हैं।

प्रश्न 5. कूर्म निवासस्थलों में 'ओक्का' की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-8, पृष्ठ-37, 'परिचय', पृष्ठ-39, 'ओक्का', पृष्ठ-40, प्रश्न 2

इसे भी देखें—कूर्म समाज की पारंपरिक मूल इकाई ओक्का या पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार है। ओक्का के केवल पुरुष सदस्यों को पैतृक संपत्ति में कोई अधिकार नहीं है; ओक्का में पैदा हुई महिलाएं इसे शादी पर छोड़ देती हैं। कोई भी महिला ओक्का की मुखिया नहीं हो सकती। श्रम का यौन विभाजन है—बाहर काम करने वाले पुरुषों और घर के अंदर महिलाओं के साथ। लिंगों को आमतौर पर अलग किया जाता है। स्वतंत्रता के बाद से नए कानूनों ने महिलाओं को पुरुषों के साथ पूर्ण समानता दी है। हालांकि पिछली परंपराएं जैसे कि व्यवस्थित विवाह अभी भी आदर्श है। ओक्का में आमतौर पर दो से तीन पीढ़ियों तक अज्ञानि रूप से संबंधित पुरुष, उनकी पत्नियों और उनके बच्चे होते हैं। ओक्का के सभी सदस्यों को एक सामान्य पूर्वज से उतारा जाता है और मृत पूर्वजों की आत्माओं को बड़ी श्रद्धा के साथ माना जाता है। प्रत्येक ओक्का एक पैतृक घर है। यह पैतृक घर एक कूर्म के लिए पवित्र माना जाता है और इसमें एक विशिष्ट वास्तुशिल्प डिजाइन होता है। पूर्वज तीर्थ (किमादा) और पूर्वज मंच (करणवा) इसके पास स्थित होते हैं।

भाग-II

प्रश्न 6. भारतीय समाज में धार्मिक बहुलता कैसे महत्वपूर्ण है? चर्चा कीजिए।

उत्तर—धार्मिक बहुलवाद सामान्य रूप से दो या दो से अधिक धार्मिक वैश्विक दृष्टिकोण की मान्यताओं को समान रूप से वैध ठहराना या स्वीकार करना है। मात्र सहिष्णुता से कहीं अधिक, धार्मिक बहुलवाद परमेश्वर या देवतागणों की ओर जाने वाले असंख्य पथों की सम्भावना को स्वीकार करता है और सामान्य रूप में पर 'व्यावर्तकतावाद' की धारणा के विपरीत होता है अर्थात् यह विचार कि केवल एक ही सच्चा धर्म है या केवल एक तरीके से परमेश्वर को जाना जा सकता है।

मूल धार्मिक बहुलवाद कम-से-कम सत्रहवीं शताब्दी से अस्तित्व में बना हुआ है, वहीं पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से यह धारणा अधिक लोकप्रिय हुई। विशेष रूप से, धार्मिक सार्वभौमिकता (सभी धर्मों का मिलकर एक धर्म के रूप में कार्य करना) और निवर्तमान में प्रसिद्ध हुए

अन्तर-धर्मीय आन्दोलन के विचार से प्रचलित संस्कृति में धार्मिक बहुलवाद की स्वीकृति बढ़ गई है।

बहुलवाद कुछ सामाजिक विषयों के ऊपर निश्चित मूल्यों या समझौते को साझा करने से कहीं अधिक बढ़कर विषय है। बौद्ध और मसीही अनुयायी दोनों सहमत हैं कि गरीबों की सहायता करना महत्वपूर्ण है, परन्तु इस तरह के सीमित समन्वय बहुलवाद नहीं है। बहुलवाद का लेना-देना प्रतिस्पर्धात्मक सच्चे दावों और परमेश्वर और उद्धार के बारे में विभिन्न मान्यताओं को स्वीकार करने के जैसे है।

इसके अतिरिक्त, दो या दो से अधिक धर्म कुछ सैद्धान्तिक मान्यताओं को साझा कर सकते हैं, तो भी विश्वास पद्धति के रूप में वे मूल रूप से भिन्न ही रहते हैं। उदाहरण के लिए, मुस्लिम और मसीही अनुयायी इस बात से सहमत हैं कि केवल एक ही परमेश्वर है, लेकिन फिर भी दोनों धर्म परमेश्वर को भिन्न रूप में परिभाषित करते हैं और कई अन्य न समझौता की जाने वाली मान्यताओं को थामे हुए हैं।

भारतीय समाज में अनेक संस्कृतियाँ, लोग, भाषाएँ और धर्म शामिल हैं। हमारे देश व विभिन्न धार्मिक विश्वासों की प्रकृति को समझने के लिए हमें अपने समाज में पाए जाने वाले विभिन्न धार्मिक समूहों के पूर्व इतिहास के संबंध में जानना आवश्यक है।

भारत के लम्बे इतिहास के दौरान समूह बाहर से आकर लगातार यहां बसते गए, इसलिए भारत में धार्मिक विविधताएं पहले से ही मौजूद हैं। यहां विभिन्न प्रांतों के सांस्कृतिक समूह अपने विशिष्ट धर्मों का पालन करते हैं। साथ-ही-साथ बाहर से आने वाले लोग अपने-अपने धर्म, प्रथाओं और संस्कृतियों को लेकर यहां आए। इसी कारण यहां कई धर्मों के अनुयायी साथ रहने लगे और धीरे-धीरे धार्मिक बहुलवाद की नींव भारतीय समाज में पड़ी। इसी प्रक्रिया को हम 'धार्मिक बहुलवाद' कहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि विविधता और अनेकता धार्मिक मान्यताओं पर आधारित है। इस तरह से धार्मिक बहुलवाद के अर्थ हैं—

- तथ्यों से पता चलता है कि भारत किसी एक धर्म की भूमि नहीं है, बल्कि प्राचीन काल से ही यह अनेक धर्मों की भूमि रही है।
- प्रत्येक धर्म की अपनी प्राथमिक विशेषताएं होती हैं, पर साथ-साथ अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक तत्व सारे धर्मों में समान रूप से पाए जाते हैं। समानताएं आपसी संबंधों और समायोजन का परिणाम हैं, जो लंबे समय से चलते रहे प्रांतीय, भाषिक और सामाजिक निकटता पर आधारित हैं।

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि धार्मिक बहुलवाद न सिर्फ वास्तविक तथ्य है, बल्कि भारत के विभिन्न धर्मों की मान्यताओं, मूल्यों और सामाजिक स्वरूप का अभिन्न अंग भी है। भारत में धार्मिक बहुलवाद के संदर्भ में आप निम्नलिखित मुद्दों के विषय में अध्ययन कर सकते हैं—

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

धर्म का समाजशास्त्र (SOCIOLOGY OF RELIGION)

परिभाषाएं तथा उपागम
(Definitions and Approaches)

धर्म : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य
(Religion: Sociological Perspective)



परिचय

मानव समाज का इतिहास अत्यंत प्राचीन और विस्तृत रहा है। समाज में व्यक्ति और व्यक्ति स्तर पर धर्म अन्योन्याश्रित रहे हैं, अर्थात् धर्म का इतिहास भी मानव इतिहास के अनुरूप है। हालांकि 'समाजशास्त्र' एक आधुनिक प्रकार्य है, जिसका प्रयोग 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में होने लगा था, किंतु धर्म का समाजशास्त्रीय विश्लेषण पहले भी होता रहा है।

वर्षों से मानव प्रकृति के साथ संघर्षरत है और समन्वय स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। अतः आरंभिक समाज में धर्म के प्रतीकों के रूप में प्राकृतिक तत्त्वों का प्रयोग सर्वत्र देखने को मिलता है। अतः प्राकृतिक विविधताओं ने धार्मिक विविधताओं को प्रभावित किया। विश्व के प्रमुख धर्मों का उद्गम प्रायः एशिया महादेशीय क्षेत्र रहा है तत्पश्चात् इस्पाइल और चीन में यह अपनी विशिष्टता एवं विविधता के साथ विद्यमान है। प्राचीन समाज के धार्मिक तत्त्वों की जानकारी हमें उनकी संस्कृति एवं लिखित पांडुलिपियों से प्राप्त होती है तथा पुरातात्विक स्रोतों से उनके साथ संतुलन स्थापित कर अनुमानित मंतव्य प्रस्तुत किया गया।

अतः धर्म का विश्लेषण जब हम समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में करते हैं तो विभिन्न समाजों के ऊपर इसका प्रयोग करते हैं। अर्थात् धर्म का समाजशास्त्र केवल धर्म का अध्ययन नहीं है वरन् धर्म के बारे में है। महान समाजशास्त्री वैयक्तिक रूप से नास्तिक रहे हैं। इमाइल दुखीम, वैस्टर मार्क, किंग्सले डेविस आदि विद्वानों ने धर्म को निरपेक्ष दृष्टि से समाज के साथ अंतर्संबंधित करके विश्लेषित किया है। अतः धर्म का समाजशास्त्रीय विश्लेषण एक धर्मनिरपेक्ष कार्य है। इसके लिए दो बातों का ध्यान रखना जरूरी है—

- विभिन्न समाजों में धर्म एवं समाज का संबंध
- धर्म की अवधारणा।

अध्याय का विहंगावलोकन

धर्म का क्षेत्र

धर्म अपने आरंभिक स्वरूप में स्मरण एवं मंत्रोच्चारण तक सीमित था, किंतु समय के साथ इसकी विविध प्रणालियां विकसित हो गईं। प्रकृति का मानवीकरण/दैवीकरण करके ईश्वर की पूजा तथा आडम्बर का ऐसा आकर्षण चढ़ा कि आज आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी हमारे लिए धार्मिक विषय नितांत संवेदनशील है।

2/NEERAJ : धर्म का समाजशास्त्र

धर्म को पूरी तरह समाज से संबद्ध करने के लिए कालांतर में इसमें पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी-पर्वत आदि को देवत्व रूप प्रदान करके, इनसे जुड़ी अनेक कहानियों का आयोजन किया गया। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र, वरुण, मरुत आदि के लिए अलग-अलग स्थान एवं वाहन का प्रस्तुतीकरण हुआ। कुल मिलाकर देवता की प्रतिष्ठा की गई, जिसकी पृष्ठभूमि के लिए उनसे जुड़ी देव-असुर संग्राम और अन्यान्य रोचक कहानियों का श्रीगणेश किया गया; यथा-रामायण, महाभारत, रामचरितमानस आदि धार्मिक ग्रंथों में ईश्वर द्वारा दुष्टों के दलन का, धर्म का अधर्म पर विजय का और भक्तजनों के उद्धार का वर्णन मिलता है।

चूँकि किसी भी मौखिक परंपरा की परिपुष्टि उसको ग्रंथ का रूप देने पर ही हो सकता है। अतः पुस्तकों से ईश्वर की महिमा के साथ-साथ भारतीय समाज की विशिष्टता का बखूबी अध्ययन किया जा सकता है। मानव प्रवृत्ति के अनुरूप ही धर्म भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तारित होता रहा और हमारी सांस्कृतिक संपत्ति बन गया।

आरंभ में जो भी ग्रंथ उपलब्ध रहे हैं, जिनसे हमें समाज के स्वरूप की जानकारी मिलती है, वे अधिकांश धार्मिक प्रयोजनों से ही लिखे गए हैं। अतः यदि समाज के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है तो वह धर्म से ही। दुर्खीम ने कहा भी है कि “धर्म सर्वव्यापक है, समाज की आत्मा है। इसने सामूहिक रूप से समाज में संबद्धता और सहभागिता के साथ एकता स्थापित की। अतः धर्म का क्षेत्र मानव समाज में विस्तृत और व्यापक है जो संस्कृति के कण-कण में व्याप्त है।”

ज्ञान की प्रक्रिया

आरंभ में धर्म ही ज्ञान का अंतिम लक्ष्य होता था, किंतु सामाजिक विकास, वर्गभेद आदि कारणों ने ज्ञान की अनेक दिशाओं का प्रवर्तन किया। विभिन्न वैज्ञानिक खोजों एवं तकनीकी आविष्कारों ने युग-प्रवर्तन का कार्य किया और तब धर्म एक आस्था और संस्कृति का प्रश्न मात्र बनकर रह गया।

आधुनिक युग में कला, दर्शन, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में मानव की स्थापना का प्रयास आरंभ हुआ, प्राचीन दैवी

अधिकारों की समाप्ति हुई और लोकतंत्र एवं जनतंत्र की स्थापना हुई। अब ईश्वर की जगह मानव विश्व के केन्द्र में आ गया, ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति नहीं किया वरन मनुष्य ने ईश्वर को अपने विचारों में स्वीकारा।

आधुनिक युग में धर्म को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने वाले दुर्खीम (1858-1917) ने धर्म और समाज की जटिल संरचना का उदाहरण देते हुए कहा है कि धर्म के सारत्व का अध्ययन करना श्रेयस्कर है। धर्म का आरंभिक रूप संकीर्णता और आडम्बर मुक्त एक मानवीय स्वरूप लिए होता है। कालांतर में धर्म का स्वरूप कर्मकांडीय और दुरुह होता चला गया। इस संदर्भ में दुर्खीम की पुस्तक ‘दी ऐलीमेन्ट्री फार्मस ऑफ रिलीजियस लाइफ’ महत्त्वपूर्ण है।

टोटम का अध्ययन

टोटम आदिकाल में मनुष्य और पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों की आत्माओं से सामंजस्य बिठाते थे। आधुनिक अनुसंधानकर्ताओं ने ऑस्ट्रेलिया की अरूण्टा जनजातीय समूह पर शोध किया और टोटम के बारे में विविध जानकारियां हासिल की, जो निम्नलिखित हैं—

- (i) पशु-पक्षियों का अहित न करना।
- (ii) नृत्य, गीत, समारोह, पूजन इत्यादि का आयोजन।
- (iii) रहस्यात्मकता, प्रायश्चित आदि।
- (iv) चेहरे पर रंग-रोगन करना तथा आनुष्ठानिक क्रियाएं।
- (v) टोटम का तात्पर्य आत्मा से जुड़ाव है।
- (vi) यह एक सामूहिक क्रिया है।

दुर्खीम ने टोटम के समारोहों को समाज की आत्मा के रूप में माना है और यह सही भी है। क्योंकि कम-से-कम टोटम के कारण ही सही, एक समूह का बनना कम बड़ी बात नहीं है। यह समाज में सरलतम रूप में विद्यमान है। दुर्खीम ने इसे धर्म का निचोड़ भी कहा है। आज भी हमारी सांस्कृतिक परंपरा में टोटम के अंश को देखा जा सकता है।

अतः टोटम को विद्वानों ने कर्मकांडों, आडम्बरों और अति सघन एवं अज्ञेय ईश्वर की संकल्पना की जगह सरल और शुद्ध रूप माना है।

लौकिक उपागम

धर्म का लौकिक रूप ही उसे समाज में मूल्य स्थापना का केन्द्र बनाता है। मर्टन ने जनजातीय लोगों पर अध्ययन करते हुए पाया कि जो परंपराएं एवं संस्कार उस समाज में विद्यमान हैं वे आकरण नहीं हैं, उनके पीछे पुष्ट तार्किक आधार है। सामाजिक सुदृढ़ता में परंपराओं की सहभागिता ने इस विचार को और बल दिया। ये धर्म के अलौकिक अथवा अप्रकट योगदान हैं। अतः विचारकों ने धर्म के लौकिक स्वरूप की खोज की और साम्यवाद में इसका व्यवहारिक रूप पाया।

लौकिक उपागम के रूप में यह स्पष्ट होता है कि धर्म का क्षेत्र समाज के प्रत्येक अंग में सम्मिलित दिखाई पड़ता है। पारसन्स ने धर्म को सामाजिक मूल्यों का अप्रत्यक्ष रूप माना है, जिसका प्रत्यक्ष अथवा लौकिक उपागम समाज में प्रचलित परंपराएं एवं सांस्कृतिक मूल्य हैं। पारसन्स ने सामाजिक मूल्यों के निर्धारण में विभिन्न संकेत चिह्नों का प्रयोग किया है—

L = लैटेन्सी (मूल्य/धर्म)

I = इंटीग्रेशन (कानूनी)

G = गोल अर्टेमेन्ट (राजनैतिक)

A = एडेप्टेशन (आर्थिक)

अतः पारसन्स के प्रतिमान में चार महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं, जिसे पारसन्सबेका AGIL पैराडाइम कहा जाता है।

इस प्रकार यह व्यवस्था क्रमिक रूप से एक-दूसरे से संबंधित है—

$$A > G > I > L$$

यहां लैटेन्सी धर्म से संबंधित है, जहां विभिन्न आर्थिक, राजनैतिक, कानूनी प्रक्रिया धर्म से संचालित होती है। इस प्रकार धर्म का समाजशास्त्रीय रूप ही इसका लौकिक उपागम है, जिसमें कर्मकांडीय वातावरण को विलग कर देखते हैं।

अर्थव्यवस्था एवं धर्म

धर्म का अर्थव्यवस्था से गहरा संबंध है। भारतीय धार्मिक पद्धति में 'धन को मैल' कहा गया है और इसके आवश्यकता से अधिक अर्जन' पर रोक लगाया गया है। इस प्रकार धर्म

अर्थव्यवस्था की समृद्धि में बाधक बन सकता है। अतः विद्वानों ने इसे दो दृष्टिकोणों से जांचा-परखा है—

(क) धर्म का अवरोधक स्वरूप—धर्म में भौतिक आकर्षण को क्षणिक और निकृष्ट मानते हुए आध्यात्मिक सुख को ब्रह्मानंद से जोड़ा गया है। ऐसे में धर्म आर्थिक समृद्धि में बाधक बनता है। एशिया महादेश में उपस्थित महत्त्वपूर्ण धर्म—हिंदू, मुस्लिम और कन्फ्यूसी में इस बाधक तत्त्व का समावेश है। इस्लाम अपने आय का एक भाग दान करने के लिए कहता है, ऋण पर ब्याज लेने से माना करता है। हिंदू धर्म में भौतिक जीवन पर कम बल दिया गया है तथा अगले जन्म को सुखमय बनाने हेतु इस जन्म में 'संतोषम परम सुखम' की अवधारणा का बोल-बाला है।

इस प्रकार ये धर्म निश्चित रूप में पूंजीवाद के विकास में बाधक हैं।

(ख) धर्म का सहयोगात्मक स्वरूप—यह धर्म के प्रति दूसरा दृष्टिकोण है, जिसमें धर्म द्वारा पूंजीवाद के बढ़ावे की बात कही गई है। अर्थात् कर्म करना, अधिक धन अर्जन, समय धन है आदि विचार। यह भौतिकतावादी धर्म में ही संभव है, जहां जीवन-मरण के बाद यहीं स्वर्ग-नरक मानकर भोगवाद को श्रेय दिया गया हो। ईसाईयों के प्रोटेस्टेंट संप्रदाय इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। कैथोलिक धर्म इस संदर्भ में थोड़ा पीछे है। मैक्स वेबरने आर्थिक समृद्धि से संबंधित विचारों को 'दी प्रोटेस्टेंट एथिक एण्ड स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' में लिखा है। पश्चिमी यूरोप में पूंजीवाद के तीव्र विकास का यही कारण रहा है। अतः तीव्र विकास में जर्मनी, हॉलैण्ड और इंग्लैंड हैं तथा देर से विकास (कैथोलिक) करने में स्पेन, फ्रांस और इटली हैं।

पूंजीवाद का उदय

जैसे ही पूंजीवाद का उदय होता है, कृषि के महत्त्व में कमी आ जाती है। इसे इस प्रकार से समझा जा सकता है कि जब सामंतवाद का बोलबाला होता है तो धर्म का महत्त्व बढ़ता है तथा कृषि का महत्त्व भी, किंतु पूंजीवाद में कृषि और धर्म का महत्त्व कम होना चाहिए। अथवा, पूंजीवाद में धार्मिक रूढ़िवाद की समाप्ति होनी चाहिए। यह ज्यादा सही प्रतीत होता है।

4/NEERAJ : धर्म का समाजशास्त्र

मार्क्स ने समाज की अधिसंरचना और अधोसंरचना को विभाजित करते हुए व्यक्ति के वर्ग को उसके व्यवहार के संचालन में महत्वपूर्ण माना है, इसी प्रकार धर्म भी है। मार्क्स ने धर्म की समाज में भूमिका स्वीकारते हुए कहा है कि धर्म मानव की पीड़ाग्रस्त मस्तिष्क को शांति प्रदान करने की स्थली है। किंतु इससे मनुष्य में कर्म करने की भावना का हास होता है। वेबर ने इस संदर्भ में धर्म को आर्थिक विकास में सहायक नहीं माना है। मार्क्स भी धर्म को मानवीय क्रियाकलापों को निर्देशित करने वाला नहीं मानते। किंतु मार्क्स ने धर्म को मानव व्यवहार में उपस्थित अवश्य माना है।

फिर भी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में धर्म की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, यह अपने परिवर्तित स्वरूप में सहयोगी अवश्य है।

जी.एस. घुर्ये जैसे विद्वान ने भारतीय जनसमुदाय की प्रतिछवि 'महाभारत' में ढूंढने की कोशिश की। इसी प्रकार अन्य खोजों द्वारा भारतीय समाज विश्लेषण में धार्मिक ग्रंथों एवं धर्म की भूमिका को निर्विवाद स्वीकृति मिली। 1913 में भारतीय जनगणना आयुक्त जे.एच. हट्टन ने 'कास्ट इन इंडिया' में स्पष्ट किया कि भारतीय धर्म पर आर्यों से पहले का भी प्रभाव है। अर्थात् हड़प्पाई सभ्यता के देवी-देवताओं को देखा जा सकता है।

देवी और देवता

देवी-देवताओं की संकल्पना धर्म का प्रधान विषय रहा है। भारतीय हिंदू धर्म में करोड़ों देवी-देवताओं की संकल्पना है। इस संदर्भ में भारतीय समाजशास्त्री ओ.पी. जोशी ने अपनी पुस्तक में इस पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। इन्होंने चित्रों और कैलेण्डरों के रूप में देवी-देवताओं के मानवीकरण के बारे में बताया है। त्रिवेन्द्रम के राजा रवि वर्मा ने तैल चित्रों द्वारा कृष्ण, विष्णु, शिव, पार्वती आदि देवी-देवताओं की प्रतिकृतियों को प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार चित्रों द्वारा पौराणिक कथाओं का प्रदर्शन व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जाने लगा। अर्थात् कालिया मर्दन, महिषासुर वध, राम राज्याभिषेक आदि। इन चित्रों को आज भी विभिन्न वार्षिक कैलेण्डरों में देखा जा

सकता है। पर्व-त्योहारों में चित्रों के प्रयोग की आसानी ने इसे और प्रोत्साहन दिया और तत्पश्चात् आज पूजा-पाठ में भी चित्रों का व्यापक प्रयोग आरंभ हो चुका है।

वैसे देवी-देवताओं की मूर्ति का निर्माण अत्यंत प्राचीन है साथ ही अजंता-एलोरा की गुफाओं आदि में भी कुछ कलाकृतियां देखी जा सकती हैं। अतः मानव सदैव स्थूल और भौतिक दृश्यमान वस्तुओं में रस पाता आ रहा है, फलस्वरूप देवी-देवताओं को मानव रूप में प्रतिष्ठित किया गया। यहां तक कि प्राकृतिक संबोधनों; जैसे-सूर्य, चाँद, गंगा, हिमालय, समुद्र आदि को भी मानव (ईश्वर) रूप में दिखाया गया।

नृजातीय लेखन संबंधी विवरण

मानवशास्त्रियों ने विभिन्न सभ्यताओं से पर्याप्त जानकारी लेकर अध्ययन का ब्यौरा प्रस्तुत किया है। श्रीनिवास का अध्ययन 'दक्षिण भारत के कुर्गों में धर्म और समाज' (1952) में विभिन्न जाति, परिवार, ग्रामीण देवी-देवताओं का अध्ययन है। इस खोज में कुर्ग जाति विशिष्ट से संबंधित अध्ययन किया गया, किंतु इससे पता चलता है कि संस्कृतीकरण कैसे होता है। इसी प्रक्रिया में अपवित्र और पवित्र की अवधारणा का जन्म भी होता है। अतः यहां धर्म का संस्कारजन्य रूप में परिवर्तन और अपवित्र-पवित्र के निर्धारण का पता चलता है।

शिंकागो के मानवशास्त्रियों ने इसी संदर्भ में लघु समुदायों का अध्ययन किया। दुर्खीम आदि विद्वानों ने भी पवित्रता-अपवित्रता के विचारों को माना है।

स्वपरख अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न 1. धर्म क्या है? धर्म के क्षेत्र का विवेचन कीजिए।

उत्तर-शाब्दिक अर्थों में 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है, 'धारण करना'। वैसे धर्म की कोई सर्वसम्मत परिभाषा नहीं मिलती है फिर भी विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएं दृष्टव्य हैं-

मैक्समूलर के अनुसार, "धर्म वह शक्ति या प्रवृत्ति है जिसके द्वारा मानव अनंत का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होता है।"